एक परिचय
(2 कुरिन्थियों)

''जैसे वह मसीह का है वैसे ही हम भी हैं''(10:7) ।

एक प्रसिद्ध सेवक ने जीवन बचाने वाले एक स्टेशन का दृष्टांत दिया है, जो एक खतरनाक समुद्र तट पर था, जहां जहाज अक्सर टूटा करते थे। स्वयं सेवक बार-बार लोगों को डूबने से बचाने के लिए अपने प्राण जोखिम में डाल देते थे। जीवन बचाने वाले स्टेशन के बढ़ने पर, इसके सदस्यों ने नावों के लिए और समुद्र में से निकाले जाने वालों के आश्चर्य के लिए कई शेड डाल लिए। फिर उन्होंने वहां एक बिल्डिंग बना ली, जहां डूबने वाले जहाज़ के पीड़ितों को राहत मिल सके। सदस्यों को बिल्डिंग बनाने में बड़ा आनन्द आया, विशेषकर रेस्टोरेंट, खेल के कमरे और अपने बैठने के लिए जगह बनाने का बड़ा आनन्द आया। फिर उस स्टेशन की प्रतिष्ठा बढ़ी और अधिक प्रभावशाली लोग उसमें शामिल होने लगे। कुछ देर बाद, सदस्यों ने अपने लिए जीवन बचाने का काम करने के लिए लोग भाड़े पर ले लिए और स्वयं क्लब का आनन्द लेने लगे।

इस विकास से जीवन बचाने वाले स्टेशन के कुछ सदस्यों को इतनी परेशानी हुई कि उन्होंने निर्णय लिया कि स्टेशन का मूल उद्देश्य कहीं खो गया है। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने इस्तीफा देकर तट के आगे जीवन बचाने वाला एक और स्टेशन आरम्भ कर दिया। कई साल बीतने के बाद नये स्टेशन में भी वैसा ही हुआ, जैसे पहले स्टेशन में हुआ था जब तक एक और समूह में उनमें से निकलकर अपना स्टेशन आरम्भ नहीं कर दिया। यदि आप आज उस समुद्र तट पर जाएंगे तो आपको तट पर विशेष क्लबों की पूरी श्रृंखला मिल जाएगी, परन्तु उनमें से किसी की भी रुचि जीवन बचाने में अब उतनी नहीं है, चाहे आज भी वहां जहाज़ डूबते हैं।

कहानी का अर्थ पता लगाना कठिन नहीं है। हम जानते हैं कि बल और शक्ति के चिह्न दिखाने के बावजूद संस्थानों में अपना मूल उद्देश्य बड़ी आसानी से गुम हो जाता है। यह प्रक्रिया कलीसिया के जीवन और सेवकाई में भी होती है। आज स्थानीय मण्डलियों में कई प्रकार के असाधारण काम पाए जाते हैं, जो इस बात का संकेत देते हैं कि उनमें काफ़ी शक्ति और बल है। जब हम जीवन के कई वैकल्पिक ढंगों पर विचार करते हैं तो कुछ आवश्यक प्रश्न पूछे जाने आवश्यक हैं: क्या सभी वैकल्पिक ढंग कलीसिया के उद्देश्य के लिए समान रूप से प्रामाणिक हैं? कार्यक्रमों की प्रामाणिकता को निर्धारित करने के लिए हम इन मानकों का इस्तेमाल कर सकते हैं? क्या यह हो सकता है कि कलीसिया जीवन बचाने वाले स्टेशन की तरह अपने मूल उद्देश्य से बहुत दूर निकलकर वैसी ही बन जाए?

मीडिया में मसीहियत की सामान्य तस्वीर में धार्मिक संस्थाओं में पाए जाने वाले रूखेपन का सुझाव मिलता है। सेवक को आम तौर पर कपटी और अपनी सेवा करने वाले के रूप में दिखाया जाता है। फिनक्लेयर लूइस एल्मर गैंटरी ऐसा बंजारा था जो अपने आपको धनवान बनाने के लिए धर्म का इस्तेमाल करता था और लोगों से छल करता था। मीडिया को आमतौर पर ऐसी

कहानियों में आनन्द आता है, जिससे संकेत मिले कि धार्मिक लोग और संस्थाएं अपने आपको अमीर बनाने के माध्यम के अलावा और कुछ नहीं हैं। साहित्य की एक बेहतरीन रचना में, दोस्टोवस्की ने एक कहानी बताई, जिसमें संगठित धर्म की प्रामाणिकता पर गम्भीर सवाल किए गए। महान परीक्षक (द *ब्रदर्स करोमरोव*) की कहानी में यीशु मसीह स्पेन के एक छोटे नगर में पृथ्वी पर वापस आता है। संगठित धर्म की सेनाओं द्वारा उसे तुरन्त जेल में डाल दिया जाता है, जो उसे बताते हैं कि उसे उनके काम में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। अन्त में यीशु से कहा जाता है, ''जा, और फिर मत आना। फिर मत आना–कभी नहीं, कभी नहीं!'' लेखक यह कहना चाहता था कि मसीहियत अपनी प्रामाणिकता खो सकती है।

मसीहियत की प्रामाणिकता पर सवाल करने वाले लोग आमतौर पर यह पूछने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते कि मसीही लोगों की सच्चाई पर प्रश्न करते हुए मसीही शिक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं या नहीं। अल्मर गैंडरी की तरह आमतौर पर की जाने वाली आलोचना यह है कि मसीही अगुवे बंजारे होते हैं और कलीसियाओं को अपनी शक्ति तथा प्रभाव को बढ़ाने के अलावा किसी और काम में दिलचस्पी नहीं होती। मसीही लोग शेष संसार के मानकों से अलग होने के जितने भी दावे करें, उनकी आलोचना होती है क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह के मानकों के ऊपर संसार के मानकों को चुना है।

पहले तो हो सकता है कि हमें कलीसियाओं और सेवकों के सामान्य चित्रणों की कोई चिंता न हो, क्योंकि हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह ''विश्वसनीयता का अन्तर'' किसी दूसरे की समस्या है। हम यह भी निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जो लोग मसीही अगुओं को अवसरवादी दिखाना चाहते हैं वे उनकी तारीफ़ से जलते हैं। परन्तु मैं मानता हूं कि हम इन प्रश्नों को आसानी से खारिज नहीं कर सकते, क्योंकि हमारे लिए प्रामाणिकता की परीक्षा में खरा न उतर पाना सम्भव है। वास्तव में हम कही बातें कहकर सही भावनाओं में से निकलने के बावजूद हो सकता है कि प्रामाणिक मसीही न हों।

प्रामाणिकता का प्रश्न कलीसिया के रूप में हमारे अस्तित्व के लिए मूल है, क्योंकि यह कई प्रकार से हमारे सामने आता है। उदाहरण के लिए मण्डली के लिए ''कलीसिया की स्थिति'' के बारे में समय–समय पर पूछने और यह तय करने का स्थान है कि एक प्रामाणिक कलीसिया के लिए कौन से कार्यक्रम आवश्यक हैं। हमारे बजटों और हमारी बिल्टियों से प्रामाणिकता के हमारे विचार की झलक मिलेगी। सेवकों तथा अन्य अगुओं के हमारे चयन से भी प्रामाणिक मसीहियत की हमारी समझ की झलक मिलेगी। हम उन अगुओं का चयन करेंगे, जो हमारी समझ से प्रामाणिक मसीही हैं। वास्तव में हमारा लगभग हर निर्णय हमारे मन में आने वाले प्रश्न के आधार पर होगा कि मसीही होने का विलक्षण चिह्न क्या है?

बजटों तथा बिल्डिंगों की वास्तविकताओं के पीछे अधिक मूल प्रश्न यह है कि प्रामाणिक कलीसिया का चिह्न क्या है? अपने समाज में हमें जवाबों की कमी नहीं है। दिक्कत यह है कि हम अक्सर विरोधाभासी जवाबों से घिरे रहते हैं। प्रामाणिक मसीहियत का अर्थ अलग–अलग लोगों के लिए अलग–अलग बातें हो चला है। इस प्रश्न पर सहमति न होने स्थानीय मण्डली के भीतर ही कई विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। कई लोग इस बात पर संतुष्ट हो सकते हैं कि प्रामाणिक मसीही का चिह्न व्यक्तिगत धार्मिक अनुभव है। यह प्रत्युत्तर उन लोगों में सुना जाता है

जो भावनाओं तथा चिह्नों की ओर ध्यान दिलाते हैं, जिनसे उनकी सेवकाई का खरा होना दिखाई देता है। एक दूसरा उत्तर दिखाई देने वाली सफलता का टैस्ट है। उस समाज में जहां दिखाई देने वाले परिणामों को बहुत सराहा जाता है, हम अपनी मसीहियत के लिए इस टैस्ट को आसानी से लागू कर सकते हैं। हम अपने मसीही विश्वास के लिए बाज़ार के मानक को लागू करने के प्रलोभन में पड़ते हैं। जब इस मानक को लागू किया जाता है, तो प्रामाणिकता का चिह्न एक पृष्ठ पर अंकों का सैट सीमित हो जाता है। कोई उन आंकड़ों को पढ़कर, जिनमें सदस्यता के कुल लाभ और कुल हानियों के साथ कुल सम्पत्तियां लिखी होती हैं। कलीसिया की सफलता या असफलता को निर्धारित कर सकता है। यदि इस मानक को लागू किया जाता है, तो कलीसिया को अधिक से अधिक लोगों के लिए आकर्षित बनाने के लिए कलीसिया की छवि सुधारने की ज़िम्मेदारी कलीसिया के अगुओं की है।

अन्य उदाहरणों में, प्रामाणिकता का टैस्ट सामाजिक तथा आत्मिक दमन से छुटकारे में कलीसिया की भागीदारी के प्रश्न तक सीमित हो गया है। अन्यों का यह कहना है कि इस टैस्ट को मुख्यतया उन शिक्षाओं और विषयों में देखा जाना चाहिए, जिनका कलीसिया में महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए मसीही के चिह्न के कई अलग-अलग संस्करण सुनने में आते हैं।

इस प्रश्न ने विशेषकर उन सेवकों को चिह्नित किया है जिनका काम मण्डली को सेवकाई के लिए तैयार करना है। सेवकाई के कई विरोधाभासी विचारों के कारण, पूर्णकालिक कार्य में शामिल लोग अपने काम के लिए उपयुक्त नमूनों का पता लगाने में पहचान के संकट से जूझते हैं। कई घटनाओं में, अपने कार्य के लिए सेवक का नमूना कलीसिया के बाहर से लिया जाता है। कइयों ने सेवक से गुणवत्ता तथा विकास बढ़ाने में सहयोग के मानकों के अनुरूप होने की उम्मीद की है। अन्यों ने अपने मॉडल व्यावसायिक सलाहकारों में देखा है। ''पहचान का संकट'' केवल सेवक के लिए ही नहीं बल्कि पूरी कलीसिया के लिए परेशानी की बात है। हमने मसीही नेतृत्व तथा कलीसिया के कार्यक्रमों के इतने वैकल्पिक संस्करण देखे हैं कि हमें उसी मूल प्रश्न की ओर लौटना आवश्यक है कि मसीही होने का चिह्न क्या है?

नये नियम को सुनना

नये नियम की शक्ति जारी रहने का एक कारण यह है कि हमारे प्रश्न पहली सदी में भी पूछे जाते थे। वास्तव में पत्रियों का लिखा जाना हमारे प्रश्नों की तरह उठने वाले प्रश्नों के कारण ही था। यदि हम यह जानने से संतुष्ट हैं कि प्रमाणिक सेवकाई क्या है तो हम पौलुस तथा कुरिन्थियों के बीच होने वाली चर्चा को ''सुनकर'' लाभ उठा सकेंगे। कुरिन्थुस की कलीसिया की स्थापना से ही (तुलना प्रेरितों 18:1-17) एक मण्डली जो लगता था कि एक संकट से निकलकर दूसरे संकट में चली जाती है, के साथ पौलुस का सम्बन्ध संकटपूर्ण था। यह संकट 1 कुरिन्थियों के लिखे जाने से भी सुलझे नहीं थे। जैसे ही पौलुस ने 1 कुरिन्थियों लिखा, समस्याओं का एक नया पुलिंदा खड़ा हो गया। स्पष्टतया, तीमुथियुस जिसने 1 कुरिन्थियों पहुंचाया था, पौलुस के पास उसे यह बताने के लिए वापस चला गया कि नये प्रश्न खड़े हो गए हैं।

मसीही लोगों के सामने आने वाले नये मुद्दों का उल्लेख 10:1-11 में किया गया है। हम एक दम से देखते हैं कि पौलुस एक ऐसे आदमी की तरह लिखता है, जिसके ऊपर हमला हो गया

हो। वास्तव में 10:1, 2 दिखाता है कि पौलुस की आलोचना हुई थी। 10:1 में हमें हो सकता है कि थोड़ा व्यंग्य लगे, क्योंकि पौलुस शायद आम आलोचनाओं की बात कर रहा था, जो उसके विरुद्ध उठाई गई थी। 10:2 के अनुसार ''कुछ लोग'' कह रहे हैं कि पौलुस ''शरीर के अनुसार चलता'' है (*kata sarka,* ''शरीर के अनुसार'')। यह मुद्दा 10:7 में अधिक ज़ोर से बताया गया है, जहां पौलुस कहता है, ''... यदि किसी को अपने पर भरोसा हो कि मैं मसीह का हूं, तो वह यह भी जान ले कि जैसा वह मसीह का है वैसे ही हम भी हैं।'' ''मसीह का'' शब्द का अर्थ ''मसीही'' हो सकता है। 2 कुरिन्थियों में जो मुद्दा दांव पर है वह यह है कि मसीही का चिह्न क्या है? पौलुस ऐसा आदमी है, जिस पर मसीही के रूप में अपनी सिफारिशें देने का हमला हो रहा है। 2 कुरिन्थियों का मुख्य मुद्दा यही है।

2 कुरिन्थियों की पूरी पुस्तक में पौलुस रक्षात्मक मुद्रा में दिखाई देता है। वे लोग जो उसकी मसीही सेवकाई पर सवाल करते हैं स्पष्टतया कुरिन्थुस में 1 कुरिन्थियों के लिखे जाने के बाद पहुंचे थे। वे अपनी ही सिफारिशी चिट्ठियां लेकर आए (3:1) और उन्होंने प्रेरित तथा ''धर्म के सेवक'' (11:13, 15) होने का दावा किया। इसके साथ ही उन्होंने अपनी तुलना पौलुस से करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि वह ''मसीह का सच्चा सेवक'' नहीं है (11:23)। पूरी पुस्तक में ऐसे संकेत हैं कि उन्हें अपने आपको दूसरों से मिलाना और दूसरे सेवकों की शक्तियों से अपनी शक्तियां मापना अच्छा लगता था (तुलना 3:1; 10:12, 18)। इसलिए पौलुस नाज़ुक स्थिति में है। उसकी पसन्द ''अपने आपको'' (10:12) अन्य सेवकों से मिलाने की नहीं है। फिर भी कलीसिया की खातिर उसे यह घोषित करना होगा कि वह एक प्रामाणिक मसीही है। 10:7 में उसका दावा 11:23 में उसकी पुष्टि जैसा ही है, ''क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? ... मैं उनसे बढ़कर हूं। ...''

पौलुस का दावा कि वह एक ''सच्चा मसीही'' है हमें याद दिलाने के लिए है कि आम तौर पर मुख्य मुद्दा सेवक का व्यवहार तथा जीवन शैली होता है, न कि कोई विशेष प्रकार की शिक्षा। उसके विरोधियों ने उसके विश्वास पर सवाल नहीं उठाया था; उन्होंने तो मसीह के सेवक के रूप में उसके कार्यों पर सवाल किया था। वास्तव में अनुक्रमणिका पर सरसरी नज़र डालने से समझ आता है कि 2 कुरिन्थियों में सेवकाई का विषय कितना महत्वपूर्ण है। ''सेवक'' (*diakonos*) तथा ''सेवकाई'' (*diakonia*) शब्द 2 कुरिन्थियों में लगभग उतनी ही बार मिलते हैं जितनी बार पौलुस के शेष पत्रों को मिलाकर सब में, चाहे अनुवादों में उनके लिए अन्य शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। *Diakonia* ग्यारह बार दिया गया है (तुलना 3:7-9; 4:1; 5:18; 6:3; 8:4; 11:8), जबकि *Diakonas* चार बार दिया गया है (3:6; 6:4; 11:5, 23)। इस शब्द का बार-बार इस्तेमाल इस बात का सुझाव देता है कि 2 कुरिन्थियों का विषय प्रामाणिक सेवकाई है। पौलुस यह पत्र का इस्तेमाल अपनी सेवकाई को हमलों से बचाने के लिए करता है।

मसीही की पहचान

मसीह के सेवक की वास्तविक पहचान क्या है? किस आधार पर हम पौलुस के साथ यह दावा करते हैं कि हम ''मसीह के'' हैं (10:7)? 10:1-11 में पौलुस पर लगाए गए आरोपों से हम उस ''टैस्ट'' को पहचान सकते हैं जो पौलुस के आलोचकों ने लगाया था: ''वे कहते हैं,

'उसकी पत्रियां तो गम्भीर और प्रभावशाली हैं; परन्तु जब वह सामने होता है, तो वह देह का निर्बल और वक्तव्य में हलका जान पड़ता है''' (10:10)। पौलुस प्रभावशाली प्रवक्ता नहीं था। वास्तव में आलोचना मूल में यही थी कि ''उसके भाषण से नफ़रत बढ़ती है।'' लगातार अस्वस्थ रहने वाले व्यक्ति की तरह (12:7), वह ''शारीरिक रूप से'' निर्बल था। उसकी ''दीनता'' (10:1) से यह प्रभाव मिला कि उसमें कोई साहस नहीं था और अपने कार्य में ''निर्बल'' था। इन आलोचकों ने यहां तक आरोप लगा दिया कि पौलुस ''शरीर के अनुसार'' काम करता है। विरोधी यह कहते प्रतीत हो रहे थे, ''यदि पौलुस सचमुच मसीही है तो उसमें सामर्थ का कोई चिह्न, प्रभावशाली लेखक का कोई प्रदर्शन या सफल रिकॉर्ड होना चाहिए।'' पौलुस की निर्बल काया से यह सुझाव मिलता था कि वह न तो मसीही है (10:7) और न मसीह का सेवक (11:23)।

विरोधियों ने कहा कि मसीही की ''पहचान'' शक्ति के दिखाई देने वाले प्रदर्शनों में होनी आवश्यक है। उनके लिए प्रभावहीन व्यक्तित्व इस बात का चिह्न है कि उसमें आत्मा की शक्ति की कमी है। जब उन्होंने पौलुस पर अपनी सेवकाई ''सांसारिक ढंग से'' चलाने का आरोप लगाया तो वास्तव में उस पर आत्मा की कमी का आरोप लगा रहे थे। ''शरीर के अनुसार'' (*kata sarka*) शब्द आम तौर पर ''आत्मा के अनुसार'' (*kata pneuma*, रोमियों 8:4, 5) का विपरीत है। अपनी ''निर्बल'' शारीरिक काया और भाषण से पौलुस प्रामाणिकता के उनके टैस्ट में फेल हो गया।

आरोप के उसके उत्तरों में पौलुस के तानों को कुछ महसूस किया जा सकता है: ''मैं वही पौलुस जो तुम्हारे सामने दीन हूं परन्तु पीठ पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूं, तुमको मसीह की नम्रता और कोमलता के कारण समझाता हूं'' (10:1)। पौलुस के लिए ''नम्रता और कोमलता'' शर्म की बात नहीं है। सांसारिक मापदण्डों के अनुसार, ''नम्रता और कोमलता'' अपमानजनक बातें हैं। इन शब्दों में हीनता और अपमान की स्थिति का सुझाव मिलता है, परन्तु वे गुण जिन्हें संसार कमज़ोरी मानता है पौलुस के लिए मसीही की पहचान थे, अर्थात मसीह की सेवा के लिए उपयुक्त आचरण। जिन गुणों ने उसके विरोधियों के सामने उसे अयोग्य बनाया था, उन्हीं गुणों को इस बात का चिह्न माना गया था कि वह मसीह का है (10:7)। वह मसीह की ''नम्रता और कोमलता'' से अपने पाठकों को विनती करता है। मसीह स्वयं पौलुस की सेवकाई का आदर्श था।

बीच में फंसी कलीसिया

हम कुरिन्थियों से सहानुभूति कर सकते हैं जब उन्होंने पौलुस की सुनी और उसके विरोधियों ने प्रामाणिक मसीहियों के रूप में अपनी पीठ थपथपाई (5:12; 6:4)। हर पक्ष मसीह के सही सेवक होने की सिफारिशें पेश करने का दावा करता था, जबकि वे माप के अलग-अलग मानक दे रहे थे। कलीसिया को यह निर्णय लेने के लिए बुलाया गया कि वह उस सेवकाई को जो प्रामाणिक थी चुनकर कैसी कलीसिया बनना चाहती है। हम मान लेते हैं कि कुरिन्थियों ने सही निर्णय लिया, जब तक उन्होंने पौलुस की बातों को माना और उसके विरोधियों की बातों को नहीं।

मूल पाठकों की स्थिति आज की हर मण्डली के लोगों से बहुत अलग नहीं थी। आज हम कार्यक्रमों की सभावनाएं देखते हैं जिनका कुछ साल पहले कभी विचार नहीं किया गया था। हम

उन विकल्पों के सामने खड़े हैं, जो हमें यह निर्णय लेने के लिए विवश करते हैं कि हम कैसी कलीसिया बनना चाहते हैं। इन अवसरों के कारण, हमारे लिए यह देखने का अच्छा कारण है कि हम उन्हीं प्रश्नों पर बात करें जो 2 कुरिन्थियों में पीछे छूट गए थे। प्रामाणिक मसीही की सिफारिशें जिनका उल्लेख 2 कुरिन्थियों में किया गया है आज भी मसीही होने के चिह्न हैं। पौलुस उन्हीं लोगों को चुनौती देता है जो उसकी परीक्षा ले रहे थे: ''अपने आपको परखो कि विश्वास में हो कि नहीं'' (13:5)।

2 कुरिन्थियों पढ़ने पर

2 कुरिन्थियों का पाठक इस बात को समझने में नाकाम नहीं हो सकता कि व्यवहारिक रूप से चाहे पुस्तक का हर पृष्ठ प्रामाणिक मसीहियत के विषय पर ध्यान दिलाता है, परन्तु बीच-बीच में पौलुस का सुर और ध्यान बदलता हुआ लगता है। पत्र के कुछ भाग यह सुझाव देते हैं कि पौलुस इस बात से प्रसन्न था कि तीतुस यह शुभ समाचार लेकर आया है कि मसीही लोगों ने पौलुस के काम को दी गई अपनी पिछली चुनौती से मन फिरा लिया है। इन भागों में हमें यह प्रभाव मिलता है कि पौलुस के मन में, जो मसीही लोगों की समस्याओं से परेशान था (2:12, 13) अब कम से कम शांति है। परन्तु अध्याय 10 से 13 में, पौलुस का सुर इस बात का सुझाव देता है कि उसकी सेवकाई पर बहुत बड़ा हमला हुआ है। वह कलीसिया को वह दिखाने को विवश है जिसे उसने सच्चा मसीही होने के लिए स्थापित किया था (10:7; 11:23)! कलीसिया में तीसरी बार जाने की तैयारी करते हुए उसे पक्का पता नहीं है कि वहां उसका स्वागत कैसा होगा। उसे डर है कि उसके सामने उन्हीं लोगों वाली समस्याएं होंगी जिनका सामना उसे कुरिन्थुस की दूसरी यात्रा में करना पड़ा था (देखें 2:1-4)। ये अध्याय नाटकीय रूप से इस बात का संकेत देते हैं कि समस्याएं खत्म नहीं हुई हैं। कलीसिया का जीवन आज भी खतरे में है!

2 कुरिन्थियों के अन्य भागों में लगता है कि वे चर्चा के बहाव में रुकावट डाल रहे हैं। उदाहरण के लिए मसीही लोगों को ''अविश्वासियों के साथ असमान जुए में जुतने'' के विरुद्ध चेतावनी के भाग अर्थात 6:14-7:1 में आते समय लगता है कि यह 6:13 और 7:2 के विचारों में रुकावट है। इसके अलावा यह पुस्तक चंदा देने में योगदान देने की आवश्यकता पर दो अलग सबक देती प्रतीत होती है (अध्याय 8 और 9)। दूसरा सबक 9:1 में आरम्भ होता है: ''उस सेवा के विषय में जो पवित्र लोगों के लिए की जाती है, मुझे तुम को लिखना आवश्यक नहीं। ...''

इस पत्री के बहाव में स्पष्ट रुकावट की कोई आसान व्याख्या नहीं है। विद्वानों ने इस पर बहस की है कि इसी पुस्तक में कई बार समस्याएं सुलझती (अध्याय 7) और अन्य समयों में सुलझने से कोसों दूर (अध्याय 10 से 13) क्यों लगती हैं। यह रुकावटें इस बात का सुझाव देती हैं कि इस पत्र को एक ही बार में नहीं लिखा गया था। शायद कुरिन्थुस की स्थिति कई बार बदल गई थी। पौलुस का बदला हुआ मूड उस कलीसिया की बदलती स्थिति को दिखा सकता है।

पत्री के बीच में इन परिवर्तनों से हम याद कर सकते हैं कि हमारे लिए कलीसिया का जीवन कुरिन्थुस की कलीसिया के अनुभव से अलग नहीं है। बहुत कम ऐसा होता है कि जब सभी समस्याओं को सुलझा लिया जाए, क्योंकि पुराने मुद्दों की जगह नये मुद्दे ले लेते हैं। विश्राम के समय भी होते हैं जब लगता है कि सब मुद्दे सुलझा लिए गए हैं, परन्तु वे समय आमतौर पर

कलीसिया के इतिहास में बीतते पलों से बढ़कर कुछ नहीं है। कुरिन्थियों के नाम पत्रों से हमें याद दिलाया जाता है कि कलीसिया के जीवन में तनाव भरे पल रहते हैं।

सारांश

सच्चे मसीही की पहचान क्या है ? उस व्यक्ति के काम को करने के लिए जो ''सेवा कराने नहीं पर सेवा करने के लिए आया'' कलीसिया के कार्यक्रम क्या हैं ? कुरिन्थियों को यह निर्णय लेना था।

समकालीन कलीसिया, जिसके सामने अपने कार्यक्रमों में योजना बनाने के विभिन्न विकल्प हैं, के सामने ऐसा ही निर्णय लेने की चुनौती है। उस कारण, 2 कुरिन्थियों उन प्रश्नों का उत्तर देता है, जो हम पूछ रहे थे।